International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-02-2026, Accepted: 27-03-2026, Published: 11-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 50-52

सपनों की होम डिलीवरी' उपन्यास में मीडिया का प्रभाव

रेष्मा पी
शोधार्थी, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालड़ी, एरनाकुलम, केरला, भारत

सारांश
दुनिया भर में प्रतिदिन अनेक जन्म, मृत्यु, मिलन और बिछुड़न की घटनाएँ होती रहती हैं, लेकिन सभी घटनाएँ सबका ध्यान आकर्षित नहीं करतीं। कुछ लोगों की खुशी सार्वजनिक खुशी बन जाती है और कुछ लोगों का दुःख सार्वजनिक दुःख। वहीं, किसी का दुःख किसी और की खुशी बन जाता है और किसी की खुशी किसी और के लिए दुःख का कारण बनती है।
मीडिया के आगमन के बाद अनेक लोगों का निजी जीवन सार्वजनिक हो गया है। विशेष रूप से सेलिब्रिटियों काकृ वे किसी भी क्षेत्र से जुड़े होंकृ मीडिया उनकी बातों को बढ़ा–चढ़ाकर समाज के सामने प्रस्तुत करने में विशेष क्षमता रखती है। जो लोग कभी सामान्य थे और जिनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था, वही जब प्रसिद्ध हो जाते हैं तो मीडिया उन्हें ऊपर उठाने और गिराने दोनों का प्रयास करता है। हमेशा उनके पीछे कैमरा लेकर चलते रहते हैं। कई बार इसका प्रभाव उनके निजी जीवन पर भी पड़ता है।
ऐसे ही मीडिया द्वारा चर्चित एक सेलिब्रिटी दंपति की कहानी पर आधारित ममता कालिया द्वारा लिखित एक लघु उपन्यास है "सपनों की होम डिलीवरी"। इस उपन्यास में आज के व्यस्त शहरी जीवन में सपनों को भी ऑर्डर करके दरवाज़े पर मिलती वस्तु की तरह देखने वाली उपभोक्तावादी मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। जहाँ रिश्तों का मूल्य कम होता जा रहा है और सपनों का भी बाजारीकरण हो रहा है।
इस परिस्थिति में घुटन महसूस करने वाली श्रुचि शर्माश नामक सेलिब्रिटी, जो एक पाक कला विशेषज्ञ है, इस उपन्यास की मुख्य पात्र है। ममता कालिया ने इस कृति में नशे में फँसकर अपना जीवन बर्बाद करती युवा पीढ़ी का चित्रण भी किया है।

मूल शब्दः मीडिया और सेलिब्रिटी संस्कृति, निजी जीवन का सार्वजनिककरण, उपभोक्तावादी मानसिकता, सपनों का बाजारीकरण, व्यस्त शहरी जीवन, युवा पीढ़ी और नशा

समकालीन महिला साहित्यकारों में ममता कालिया का नाम महत्वपूर्ण है। सहानुभूति के साथ–साथ स्वानुभूति को भी उन्होंने अपने साहित्य में स्थान दिया है। अपनी रचनाओं में उन्होंने शिक्षित एवं स्वावलंबी स्त्री पात्रों का चित्रण किया है, जिनमें नौकरी करने वाली तथा घर के भीतर रहने वालीकृदोनों प्रकार की स्त्रियाँ शामिल हैं। नौकरी करने वाली महिलाओं की समस्याएँ घर–गृहस्थी में व्यस्त नारियों की समस्याओं से भिन्न होती हैं। इन दोनों प्रकार की महिलाओं को उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है।
नारी हर समय विभिन्न समस्याओं से गुजरती है। समय के साथ उनमें कुछ परिवर्तन अवश्य आता है, लेकिन वे पूरी तरह समाप्त नहीं होतीं। सन् 2016 में प्रकाशित ममता कालिया के लघु उपन्यास 'सपनों की होम डिलिवरी' में भी अनेक समकालीन समस्याओं पर चर्चा की गई है, जो आज भी ज्वलंत रूप में विद्यमान हैं। शिक्षा, नशे की प्रवृत्ति, टूटते पारिवारिक संबंध, स्त्री की शारीरिक शोषण, अकेलापन, बाजारीकरण, समाज में मीडिया का प्रभाव, महानगरीय जीवन की समस्याएँ, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव तथा आर्थिक असमानता आदि अनेक विषयों को यह उपन्यास पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य 'सपनों की होम डिलिवरी' उपन्यास में चित्रित मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना है।
दुनिया भर में प्रतिदिन अनेक जन्म, मृत्यु, मिलन और बिछुड़न की घटनाएँ होती रहती हैं, लेकिन सभी घटनाएँ सबका ध्यान आकर्षित नहीं करतीं। कुछ लोगों की खुशी सार्वजनिक खुशी बन जाती है और कुछ लोगों का दुःख सार्वजनिक दुःख। वहीं, किसी का दुःख किसी और की खुशी बन जाता है और किसी की खुशी किसी और के लिए दुःख का कारण बनती है। मीडिया के आगमन के बाद अनेक लोगों का निजी जीवन सार्वजनिक हो गया है। विशेष रूप से सेलिब्रिटियों काकृ वे किसी भी क्षेत्र से जुड़े हों— मीडिया उनकी बातों को बढ़ा–चढ़ाकर समाज के सामने प्रस्तुत करने में विशेष क्षमता रखती है। जो लोग कभी सामान्य थे और जिनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था, वही जब प्रसिद्ध हो जाते हैं तो मीडिया उन्हें ऊपर उठाने और गिराने दोनों का प्रयास करता है। हमेशा उनके पीछे कैमरा लेकर चलते रहते हैं। कई बार इसका प्रभाव उनके निजी जीवन पर भी पड़ता है। ऐसे ही सोशल मीडिया द्वारा चर्चित एक सेलिब्रिटी दंपति की कहानी पर आधारित ममता कालिया द्वारा लिखित एक लघु उपन्यास है "सपनों की होम डिलीवरी"। इस उपन्यास में आज के व्यस्त शहरी जीवन में सपनों को भी ऑर्डर करके दरवाज़े पर मिलती वस्तु की तरह देखने वाली उपभोक्तावादी मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। जहाँ रिश्तों का मूल्य कम होता जा रहा है और सपनों का भी बाजारीकरण हो रहा है। इस परिस्थिति में घुटन महसूस करने वाली रुचि शर्मा नामक सेलिब्रिटी, जो एक पाक कला विशेषज्ञ है, इस उपन्यास की मुख्य पात्र है। ममता कालिया ने इस कृति में नशे में फँसकर अपना जीवन बर्बाद करती युवा पीढ़ी का चित्रण भी किया है।
'सपनों की होम डिलिवरी' रुचि शर्मा नामक एक पाक–कला विशेषज्ञ को केंद्र में रखकर लिखा गया लघु उपन्यास है, जो लगभग 40 वर्ष की है। यह उपन्यास प्रसिद्ध पाक–कला विशेषज्ञ एवं पत्रकार नाइजेला लॉसन के जीवन की एक घटना से प्रेरित है। उनके पति के साथ हुई झगड़ा चित्र सहित अखबारों में प्रकाशित हुआ था, जो इस उपन्यास का प्रेरणा–स्रोत है।
रुचि की शादी उसकी इच्छा और सहमति के बिना एक दुराचारी और क्रूर व्यक्ति से कर दी जाती है, जब वह एम.ए. कर रही थी। स्त्री को केवल शरीर मानने वाले प्रभाकर से किसी प्रकार तलाक लेकर वह बहुत कठिनाइयों के बीच अपनी पढ़ाई पूरी करती है। कई वर्षों तक संघर्ष करने के बाद उसे एक टीवी चौनल पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।
वहाँ से उसके जीवन का अच्छा समय शुरू हुआ। इस शो से उसे नाम, पैसा और प्रतिष्ठा मिलने लगी। अब तक अकेली रहने

वाली रुचि के पास उसके माता–पिता और अन्य लोग भी आने लगे। लेकिन बाहर से समृद्ध दिखाई देने वाली रुचि भीतर से तड़पती ही रही। उसी समय उसका परिचय सर्वेश नारंग नामक एक खोजी पत्रकार से होता है और दोनों पति–पत्नी बनने के बारे में सोचने लगते हैं। प्रगतिवादी चिंता रखनेवले सर्वेश सहजीवन को प्रोत्साहित करते हैं, लेकिन रुचि वैवाहिक जीवन पर अधिक बल देती है। दोनों के बेटे भी हैं, जो लगभग 16 और 18 वर्ष के हैं। दोनों ने नशे की ओर बढ़कर अपना जीवन खराब किए हैं।

मीडिया ने रुचि शर्मा के सपनों को पंख दिए। अब तक दुनिया से अपरिचित रहने वाली रुचि जब टीवी पर अपना शो चलाने लगी, तब से उसने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। अपने पैरों पर खड़े होने की इच्छा हर स्त्री में होती है और उसके लिए वह हमेशा प्रयत्नरत भी रहती है। एक सामान्य व्यक्ति को सेलिब्रिटी बनाना और किसी सेलिब्रिटी की जनप्रियता को नष्ट करना—दोनों में मीडिया का बहुत बड़ा हाथ होता है। मीडिया मुख्यतः टीवी मोबाइल फोन की तुलना में टीवी घर में रहने वाले बूढ़े लोगों के लिए उपयोग करना अधिक आसान होता है। विशेषतः पाककला के सत्र केवल बूढ़ों ही नहीं, बल्कि सभी का ध्यान आकर्षित करते है। आज भी टीवी पर जो पाककला से संबंधित कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, उन्हें बहुत लोग देखते हैं और उनके अनुसार व्यंजन भी बनाते हैं।रुचि और सर्वेश की मुलाकात भी एक टीवी शो के माध्यम से ही होती है। उसके बाद ही दोनों का संबंध धीरे–धीरे प्रेम में बदल जाता है। दोनों अपने–अपने काम में होशियार और ईमानदार हैं तथा आजकल के युवाओं की तरह दिखावा भी नहीं करते।

इस उपन्यास में मीडिया के माध्यम से यह दिखाया गया है कि टीवी शो और मीडिया की दुनिया कभी–कभी वास्तविक जीवन से बिल्कुल अलग होती है। लोग सामान्यतः यह सोचते हैं कि जो व्यक्ति हर दिन नए–नए व्यंजन बनाकर दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है, उसके घर में भी हमेशा स्वादिष्ट पकवान बनते होंगे और उसके घरवालों को रसोई में कोई काम नहीं करना पड़ता होगा। "कमाल की बात यह है कि पिछले डेढ़ साल में एक भी बार न उसने व्यंजन में दुहराव डाला न प्रस्तुतीकरण में।" यहाँ रुचि के बारे में बताया गया है, जो दो टीवी चौनलों पर पाककला से संबंधित कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। रुचि दो चौनलों पर लगातार कार्यक्रम प्रस्तुत करती है और वह इस बात का ध्यान रखती है कि किसी भी दिन पहले से प्रस्तुत किया गया व्यंजन दोहराया न जाए। इसके बावजूद उसे अपने घर के काम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। परिणामस्वरूप भोजन के लिए उसे कैटरिंग सेवा पर निर्भर रहना पड़ता है। "रसोईघर की दीवार पर टंगे करछुल, पौनी और कद्दूकस कभी काम न आते।" रसोईघर की दीवार पर टंगे करछुल, पौनी और कद्दूकस जैसे उपकरण कभी उपयोग में नहीं आते। पैसे के लिए रुचि दो टीवी चौनलों पर पाक–कला प्रस्तुत करती है, लेकिन उसके अपने घर का रसोईघर लगभग निष्क्रिय ही रहता है। लोग अक्सर पैसे कमाने के लिए किसी भी काम को करते हैं, लेकिन जब वही काम अपने घर में बिना किसी आर्थिक लाभ के करना पड़े, तो वे उसे करने में उतनी रुचि नहीं दिखाते। रुचि का जीवन भी इसी विरोधाभास को दर्शाता है। मीडिया में वह जिस रूप में दिखाई देती है, वास्तविक जीवन में वह वैसी नहीं है। कभी–कभी मीडिया की दुनिया और वास्तविक जीवन के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।उपन्यास यह भी दिखाता है कि मीडिया की दुनिया लोगों को किस प्रकार अत्यधिक व्यस्त जीवन जीने के लिए विवश कर देती है।

मीडिया ने रुचि के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। पहले जो लोग उसका साथ नहीं देते थे, वे भी धीरे–धीरे उसके साथ जुड़ने लगे। मीडिया ने निसहाय रुचि को जीने का एक मार्ग दिखाया और उसी के माध्यम से वह अपने पैरों पर खड़ी होने में सक्षम हुई। रुचि की पहली शादी एम.ए. के समय ही हो जाने के कारण वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकी। पति के अत्याचार और पीड़ा को सहन न कर पाने के कारण वह घर छोड़ने के लिए विवश हो गई। घर से निकलने के बाद उसने किसी प्रकार अपनी पढ़ाई पूरी करने और कोई काम पाने की इच्छा से कई वर्षों तक संघर्ष किया। इसी दौरान उसे एक टीवी चौनल में कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिला।

इस उपन्यास में मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का चित्रण किया गया है जिसमें सकारात्मक पक्ष का उल्लेख इस प्रकार मिलता है कि पति से अलग रहनेवाली एक स्त्री के लिए अपने जीवन को आगे बढ़ाना अत्यंत कठिन होता है। मीडिया की सहायता से ही रुचि अपने जीवन को एक मजबूत आधार दे सकी। यदि उसे ऐसा अवसर न मिलता तो उसके जीने की आशा ही समाप्त हो सकती थी। रुचि के अनेक प्रशंसक थे। वे पत्र, फोन और ई–मेल जैसे माध्यमों से अपना प्रेम और प्रशंसा व्यक्त करते थे। टीवी चौनल के माध्यम से भी अनेक पत्र आते थे और कभी–कभी किसी दिलचस्प पत्र का उत्तर कार्यक्रम के दौरान ही दिया जाता था। इतना ही नहीं, महीने में एक दिन सबसे रोचक पत्र लिखने वाले दर्शक को कार्यक्रम में आमंत्रित भी किया जाता था और उसकी पसंद का व्यंजन उसी के सामने बनाकर दिखाया जाता था।

कभी–कभी यह भी देखा जाता है कि टीवी चौनलों पर प्रसारित कार्यक्रमों के विरोध में बोलने वाले लोगों को भी उसी कार्यक्रम में बुलाकर अपनी बात रखने का अवसर दिया जाता है। यह भी मीडिया की एक रणनीति होती है, जो कार्यक्रम की टीआरपी बढ़ाने में सहायता करती है। उपन्यास में इस पक्ष को भी प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। एक आमंत्रण कार्यक्रम में सर्वेश नारंग को बुलाया गया, जो रुचि के कार्यक्रम का प्रशंसक नहीं था। उसने चौनल में रुचि द्वारा प्रस्तुत किए गए एक व्यंजन को चुनौती दी थी। शुरुआत में रुचि को यह बात पसंद नहीं आई, क्योंकि उसके विरोध में बोलने वाले व्यक्ति को ही उसके कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। लेकिन कार्यक्रम के निर्देशकों का मानना था कि कार्यक्रम के निर्देशकों ने इसलिए उसे बुलाया कि "किसी के मुँह पर तो टेप नहीं लगाया जा सकता उसे जो बोलना है हमारे कार्यक्रम में बोले जगह–जगह विषवमन न करें"। मतलब किसी के मुँह पर ताला नहीं लगाया जा सकता। यदि उसे कुछ कहना है, तो वह मंच पर ही कहे, ताकि वह इधर–उधर अनावश्यक आलोचना न करे, जिससे चौनल की टीआर पी प्रभावित हो सकती है। मीडिया कई बार लोगों को आपस में परिचित कराने का माध्यम भी बनता है। कई बार यही परिचय आगे चलकर प्रेम संबंधों और फिर पति–पत्नी के रिश्ते में बदल जाता है। सर्वेश और रुचि का परिचय भी मीडिया के माध्यम से ही हुआ था। सर्वेश एक खोजी पत्रकार है, जो स्वयं भी मीडिया का ही हिस्सा है और विभिन्न घटनाओं के पीछे सच की तलाश में लगा रहता है। हालाँकि सर्वेश का दूसरों के जीवन के पीछे पड़ना रुचि को अच्छा नहीं लगता। कई बार वह सर्वेश से कहती है कि लोगों के निजी जीवन में इस प्रकार हस्तक्षेप करना उचित नहीं है। इस पर सर्वेश जवाब देता है कि "मैं कभी तुम्हारे काम में दखलंदाज़ी नहीं करता, तुम क्या कुछ सही– गलत सिखाती हो"। तब वह याद दिलाती है कि " तुम भूल रहे हो। हमारी तो मुलाक़ात ही तुम्हारी दखलंदाज़ी से शुरू हुई थी।" रुचि का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने का अधिकार है और किसी को भी दूसरों के निजी जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

मीडिया अक्सर प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्तियों के व्यक्तिगत जीवन के पीछे कैमरा लेकर दौड़ता रहता है। रुचि और सर्वेश भी जानी–मानी हस्तियाँ हैं। सर्वेश स्वयं दूसरों के जीवन को

सार्वजनिक करने का काम करता है, परंतु अपने जीवन को सार्वजनिक बनाना उसे पसंद नहीं है। यद्यपि इस उपन्यास का मुख्य विषय कुछ और है, फिर भी मीडिया का प्रभाव इसमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जब कोई व्यक्ति प्रसिद्ध हो जाता है, तो उसके पीछे हमेशा कैमरे लगे रहते हैं। उसके जीवन की अच्छी घटनाओं को एक दिन तक और बुरी घटनाओं को कई दिनों तक मीडिया में बार–बार दिखाया जाता है। नई–नई खबरें मिलने तक उन घटनाओं को बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है और विभिन्न क्षेत्रों के लोग उन पर चर्चा करते रहते हैं। किसी सेलिब्रिटी का कहीं जाना भी मीडिया के लिए एक बड़ा समाचार बन जाता है। उपन्यास में ही कहा गया है, "दोनों प्रसिद्ध हस्तियाँ थी जिनका इस कैफ़े में बैठना भी खबर बनने जैसा था।" जहाँ ऊँचे आवाज़ भी आये तो सभी लोग का ध्यान उन्हीं पर ही होता। यदि वहाँ कोई पत्रकार मौजूद हो, तो वह घटना तुरंत समाचार का रूप ले लेती है। उपन्यास में भी इसी प्रकार की स्थिति का चित्रण किया गया है। "इस मेज का वार्तालाप , आलाप और सल्लाप की सीमाएं तोड़ विवाद और प्रलाप पर जा पहुँचा।" इतना ही नहीं, "सर्वेश ने दाँत पीसते हुए अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाकर रुचि की गर्दन पकड़ ली"। वहाँ बैठे एक पत्रकार ने इस दृश्य को अपने फोन के कैमरे में कैद कर लिया। अगले दिन सभी अखबारों में रुचि और सर्वेश के झगड़े की तस्वीर विभिन्न शीर्षकों के साथ प्रकाशित हुई। इसके बाद दोनों को लोगों और मीडिया के सवालों का सामना करना पड़ा और उन्हें इस घटना की बार–बार व्याख्या करनी पड़ी।

सर्वेश को भी यह चिंता होने लगी कि इस घटना से उसकी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। रुचि भी इस स्थिति से काफी परेशान हो गई। इस प्रकार मीडिया ने उनके निजी जीवन की एक छोटी–सी घटना को सार्वजनिक चर्चा का विषय बना दिया। इस घटना के बाद रुचि को अपने चौनलों में काम खोना पड़ा और आर्थिक रूप से भी उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जिस मीडिया ने उसे प्रसिद्धि दिलाई, उसी मीडिया ने बाद में उसकी प्रतिष्ठा को भी गिरा दिया। "प्रसिद्ध लोगों के लिए गोपनीयता एक असंभव मरीचिका है।" लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि प्रसिद्ध व्यक्तियों के लिए गोपनीयता बनाए रखना लगभग असंभव हो जाता है। एक सेलेब्रिटी दंपति को मीडिया द्वारा मिली अत्यधिक सार्वजनिकता से प्रेरित होकर ममता जी ने यह उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि मीडिया और विज्ञापन लोगों को उपभोक्तावादी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मीडिया न केवल वस्तुओं को, बल्कि मानवीय रिश्तों को भी 'होम डिलीवरी' की चीज़ बना देता है। इस प्रकार लेखक यह संकेत करते हैं कि आधुनिक मीडिया के प्रभाव से मानवीय संबंधों की प्रकृति भी बदलती जा रही है।

सन्दर्भ सूची

1. ममता कालिया: सपनों की होम डिलिवरी
2. डॉ जशवंतभाई जी पंड्या: हिंदी साहित्य नव विमर्श
3. डॉ अच्युतानंद मिश्र: अतिरिक्त की चेतना (लेख, रचना समय, वेब पत्रिका)
4. डॉ रेणुका मोरे: नारी विमर्श की नयी दिशाएँ
5. गिरीश पंकज: मेडियाय नम: